आज का पुरुषार्थ 7 August 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज हम तपस्या करेंगे ईश्वरीय नशें और परमात्मम प्यार में डूबकी लगाने की "*

तपस्या का स्वर्णिम अवसर केवल **संगमयुग** पर ही प्राप्त होता है। क्योंकि स्वयं भगवान **राजयोग की तपस्या** सिखाते है।

वे आते है, ब्रह्मा तन में आते है, बोलते है। **टीचर** बनकर आते है। वो **योगेश्वर** है, और अपने बच्चों को भी योगेश्वर बना देते है।

तो योग की विद्या बहुत सहज हो गई, क्योंकि सिखाने वाला स्वयं भगवान है। भिन्न भिन्न steps से हम ऊपर जाये वा direct परमपिता परमात्मा से योग लगाये दोनों ही कर सकते है।

परन्तु सबसे पहले soul conscious होना परम आवश्यक है। Soul conscious का फायदा ही है, मन के व्यर्थ संकल्प स्वतः ही समाप्त होने लगता है।

इसके लिए बहुत सारी विधि अपनाई गई है। योग दर्शन में भी। Soul Conscious हो जाये, आत्म दर्शन में लग जाये, बाकी सारी चीजें स्वतः ही ठीक हो जाती है।

इसी soul consciousness में **ईश्वरीय नशा, प्राप्तियाँ** क्या क्या हुई! स्वयं भगवान से , परमपिता से।

यह चीजें भी **राजयोग की foudation** का काम करती है। ईश्वरीय नशा और साथ साथ परमात्मम प्रेम। तो इन बातों पर बहुत ध्यान देंगे।

ईश्वरीय नशा क्या होगा हमारा? अब तक हम जिसे भगवान कहते आये, **अब वो हमारा पिता है।** वो हमारा है। यह feeling हमें रहनी चाहिए।

वो स्वयं पढ़ाने आये है इस अंतिम जीवन में। इस **अंतिम समय** में। उनका और हमारा यह सुन्दर मिलन हुआ है। कबसे बिछुड़े थे हम। कब से उसे बुलाते थे।

" आ जाओ ... !! "... इन्तजार करते थे, कभी भगवान आयेंगे तो हम ऐसे ऐसे करेंगे। ऐसे उनके साथ रहेंगे। ऐसे उन पर जीवन बलिहार करेंगे।

अब वो आये, हमने अपने वायदे निभाये। **हमने सबकुछ पा लिया** ... !! यह ईश्वरीय नशा चढ़ाने वाली बात।

तो **व्यर्थ चिन्तन**, पर चिन्तन, तेरा-मेरा, ईर्षा-द्वेष, इससे हम पार हो गये।

क्या क्या मिला हमें भगवान से। लोग तो कहते है जो कुछ हमें मिला है उसने ही दिया है। यह तो सांसारिक चीज है।

परम शिक्षक के पास आये और सत्य ज्ञान के भण्डार भरते गये। दुसरा वो स्वयं हमारे हो गये। हमारे छत्रछाया बन गये। हमारे **ख़ुदा दोस्त** बन गये।

उसने आकर हमें बहुत सुख दिये, जीवन जीना सिखाये। सहारा बन गये वो हमारे। **सर्वशक्तिमान** हमारे साथी बन गये। उन्होंने आकर हमें **निश्चिंत** और **निर्भय** कर दिया।

कितनी शान्ति मिली। करोड़ों लोगों के चित्त शान्त हो गया। कितनों को परमात्मम प्रेम मिला। अपनापन मिला। वो हमारा सच्चा मात-पिता।

हमारे लिए **स्वर्ग का सौगात** लेकर आये। हमारे लिए वो ऐसी दुनिया बना रहे है जिसकी हम कल्पना भी नहीं की थी। जिसमें हमें कमाना भी नहीं पड़ेगा।

अथाह सुख, शान्ति, सम्पदा, सुन्दर परिवार, सुन्दर शरीर, निरोगी कांचन काया यह सबकुछ हमें प्राप्त होगी।

तो अब इन बातों पर ध्यान दे, तपस्या के लिए। इसका चितन करे। और प्रैक्टिस करे परमात्म स्वरुप पर स्थित होने की।

तो योग की तपस्या हमारी दिनों दिन सहज होती जायेगी। और हम इस मार्ग पर आगे बढ़ते चलेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org